अध्याय

16

नौबतखाने में इबादत

© NCERT not to be republished

यतींद्र मिश्र

जीवन परिचय

यतींद्र मिश्र

जन्म — 12 अप्रैल सन् 1977 ई.
अयोध्या,उत्तर प्रदेश
लखनऊ विश्वविद्यालय से हिंदी में एम . ए .

काव्य संग्रह
यदा — कदा 1997 ई.
अयोध्या तथा अन्य कविताएँ 1999 ई.
ड्योढ़ी पर आलाप 2005 ई.

व्यक्ति — चित्र
ठुमरी गायिका गिरिजा देवी —गिरिजा
नृत्यांगना सोनल मानसिंह —देवप्रिया
शहनाई वादक बिस्मिल्ला खाँ — नौबतखाने में इबादत

पुरस्कार एवं सम्मान
भारतभूषण कविता सम्मान
हेमंत स्मृति कविता पुरस्कार
ऋतुराज सम्मान

संपादन
सहित (अर्द्धवार्षिक पत्रिका)

1999 ई. से साहित्य और कलाओं के संवर्द्धन और अनुशीलन के लिए विमला देवी फाउंडेशन का संचालन

पाठ—परिचय

'नौबतखाने में इबादत ' शीर्षक पाठ प्रसिद्ध शहनाई वादक, भारतरत्न उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ पर रोचक शैली में लिखा गया व्यक्ति — चित्र है।

प्रस्तुत पाठ में बिस्मिल्ला खाँ के परिचय के साथ -साथ उनकी रुचियों, उनके अंतर्मन की बनावट,संगीत साधना और संगीत के प्रति उनकी लगन को संवेदनशील भाषा में व्यक्त किया गया है।

शहनाई के उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के बचपन का नाम— अमीरुद्दीन और उनके बड़े भाई का नाम— शम्सुद्दीन था। इनका जन्म बिहार के डुमराँव में एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ था।

© JCERT not to be republished

डुमराँव जो दो कारणों से प्रसिद्ध है —एक तो उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के जन्म के कारण और दूसरा उनकी शहनाई में लगाए गए रीड(एक प्रकार की घास) के लिए,जो मुख्य रूप से डुमराँव में सोन नदी के किनारे पाई जाती है ।

वैदिक इतिहास में शहनाई का कोई उल्लेख नहीं मिलता। इसे संगीत शास्त्रांतर्गत सुषिर — वाद्यों में गिना जाता है।अरब देश में फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य जिसमें नाड़ी(नरकट या रीड) होती है, को नय बोलते हैं। शहनाई को शाहेनय अर्थात् सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि दी गई है । 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में तानसेन के द्वारा रचित बंदिश, जो संगीतराग कल्पद्रुम से प्राप्त होती है, में शहनाई, मुरली,वंशी,श्रृंगी एवं मुरछंग आदि का वर्णन आया है।

खाँ साहब को 14 साल की उम्र में संगीत की प्रेरणा दो बहनों(रसूलनबाई और बतूलनबाई)से मिली । उनकी अबोध उम्र में अनुभव की स्लेट पर संगीत प्रेरणा की वर्णमाला रसूलनबाई और बतूलनबाई ने उकेरी है।

खाँ साहब बचपन में छुपकर नाना को शहनाई बजाते सुनते और जब सभी लोग उठ कर चले जाते तब वे ढेरों छोटी—बड़ी शहनायों की भीड़ से अपने नाना वाली शहनाई ढूँढते और एक —एक करके शहनाई को फेंककर खारिज़ करते जाते,सोचते— 'लगता है मीठी वाली शहनाई दादा कहीं और रखते हैं।'

बिस्मिल्ला खाँ पक्के मुसलमान थे। वे पाँचों वक़्त की नमाज अदा करते थे । मुहर्रम का उत्सव बड़ी श्रद्धा से मनाते थे, फिर भी वे हिंदुओं की पवित्र नदी गंगा को मइया कहते थे। बाबा विश्वनाथ और बालाजी के मंदिर में नित्य शहनाई बजाया करते थे।उनके खानदान की कई पुश्तें वहाँ के प्रतिष्ठित शहनाई वादक रह चुके हैं ।

वे जब भी काशी से बाहर रहते हैं तब काशी विश्वनाथ और बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते हैं, थोड़ी देर ही सही मगर उसी और शहनाई का प्याला घुमा दिया करते हैं और भीतर की आस्था रीड के माध्यम से बजे उठती है।

बिस्मिल्ला खाँ और उनकी शहनाई दोनों एक दूसरे के पर्याय थे।खाँ साहब को ताल मालूम था, राग मालूम था।

© JOERT not to be republished

एक बार उनकी किसी शिष्य ने उन्हें फटी तहमद पहनने के लिए रोकते हुए कहा कि इतनी प्रतिष्ठा और भारत रत्न जैसा सम्मान मिलने के बाद उनको फटी तहमत नहीं पहननी चाहिए। बिस्मिल्ला खाँ साहब का उत्तर था कि सम्मान उन्हें उनकी शहनाई के कारण मिला है न कि लुंगी के कारण ।उनका कहना था कि मालिक से यही दुआ है कि सूर न फटे चाहे तहमद फट जाए क्योंकि फटी तहमद तो सिल जाएगी।

खाँ साहब को दुः ख है कि अब काशी में पहले वाली मलाई बरफ़, कचौरी - जलेबी नहीं मिलती है और न ही संगतियों के लिए गायकों के मन में है पहले जैसा कोई आदर ही रहा।अब घंटों रियाज को कोई नहीं पूछता। कजली,चैती और शिष्टाचार वाले पहले के समय को याद कर लो भाव विभोर हो जाते हैं जिसका आज हवाओ है इसके उपरांत भी काशी की सुबह व शाम आज भी संगीत के स्वरों के साथ होती है यह एक पावन भूमि है यहां मरना भी आनंद मंगल दायक है यह अशोक कोमो की एकता का प्रतीक है को यद कर वे भावविभोर हो जाते हैं।

भारतरत्न से लेकर इस देश के ढेरों विश्वविद्यालयों की मानद उपाधियों से अलंकृत व संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार एवं पद्मविभूषण जैसे अनेक सम्मानों से विभूषित बिस्मिल्ला खाँ का 90 वर्ष की भरी- पूरी आयु में 21 अगस्त 2006 ई. को स्वर्गवास हो गया।

खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर जिंदा रखा।

1 बिस्मिल्ला खाँ, 2 अमीरुद्दीन, 3 डुमराँव (बिहार), 4 काशी विश्वनाथ मंदिर,बालाजी मंदिर, 5 रसूलनबाई, बतूलनबाई, 6 सुलोचना, 7 मुहरर्म, 8 संगीत नाटक अकादमी, 9 पद्मविभूषण, 10 भारतरत्न, 11 21अगस्त 2006 ई.

शब्दार्थ-

ड्योढ़ी - दहलीज, नौबतखाना प्रवेश द्वार के ऊपर मंगल ध्वनि बजाने का स्थान,

रियाज़ - अभ्यास,

वाज़िब - उचित,

लिहाज - ख़याल,

गोया - मानो,

शृंगी - सींग का बना वाद्ययंत्र,

रोज़नामचे - हर दिन का ब्यौरा लिखने वाली नोटबुक,

© JCERT not to be republished

मुरछंग – एक प्रकार का लोक वाद्ययंत्र,

पोली – खोखली,

साहबजादा – पुत्र,

मसलन – उदाहरण स्वरुप,

आसक्ति – लगाव,

उकेरना – खींचना,

वैदिक – वेद से संबद्ध,

शास्त्रांतर्गत – शास्त्र के अंतर्गत,

इबादत – उपासना,

तासीर – गुण,

अनगढ़ – बिना गढ़ा हुआ,

तमीज़ – अदब,

सलीका – ढंग,

नौहा – करबला के शहीदों पर केंद्रित शोक गीत,

शहादत – शहीदी,

बदस्तूर – यथावत,

कायम – विद्यमान,

जिक्र – उल्लेख,

नैसर्गिक – स्वाभाविक,

तालीम – शिक्षा,

जन्नत – स्वर्ग,

आनंद कानन – सुख का वन,

उपकृत – एहसान मंद,

तहजीब – शिष्टता,

सरगम – सुरीली ध्वनियों का समूह,

तहमद – लुंगी,

दुआ – प्रार्थना,

लुप्त – गायब,

जिजीविषा – जीने की ईच्छा

© JCERT not to be republished

प्रश्न — अभ्यास

प्रश्न 1. शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है ?

उत्तर- शहनाई की दुनिया में डुमराँव को याद किए जाने के मुख्यतः दो कारण हैं —

शहनाई बजाने में जिस रीड का प्रयोग किया है वह डुमराँव में ही सोन नदी के किनारे मिलती है। इस रीड के बिना शहनाई बजना मुश्किल है।

मंगल ध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ की जन्मस्थली डुमराँव ही है।

प्रश्न 2. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा गया है ?

उत्तर— माँगलिक अवसरों पर जितने भी वाद्य बजाए जाते हैं, उनमें शहनाई सर्वश्रेष्ठ है और उसे साधने वाले बिस्मिल्ला खाँ अपनी सुर- साधना के अस्सी बरस हो जाने पर भी

अल्लाह से सच्चे सुर की नेमत माँगते हैं। निरंतर अभ्यास से उस सुर में दिनों -दिन तासीर बढ़ती जाती है और अब उनकी समानता करने वाला कोई नहीं है।उनकी गणना भारत के सर्वश्रेष्ठ शहनाई वादक के रूप में की जाती है। उन्होंने शहनाई को भारत ही नहीं विश्व में लोकप्रिय बनाया। इसीलिए बिस्मिल्ला खाँ को मंगलध्वनि का नायक कहा जाता है।

प्रश्न 3. सुषिर- वाद्यों से क्या अभिप्राय है? शहनाई को 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि क्यों दी गई होगी?

उत्तर- सुषिर वाद्यों से अभिप्राय है — ऐसे वाद्य जिन्हें मुँह से फूँककर बजाया जाता है। ये वाद्य छिद्र वाले तथा अंदर से खोखले होते हैं। शहनाई को सुषिर वाद्य माना जाता है, क्योंकि इसे भी मुँह से फूँककर बजाया जाता है।इस वाद्य में रीड(नरकट)होती है।इसी के सहारे शहनाई को फूँका जाता है। अन्य वाद्य यंत्रों की तुलना में कहीं अधिक सुरीला तथा मंगलध्वनि का वाद्य होने के कारण शहनाई को शाहेनय अर्थात् सुषिरवाद्यों में शाह की उपाधि दी गई है।

प्रश्न 4. आशय स्पष्ट कीजिए —

(क) 'फटा सुर न बख्शें। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।'

(ख) 'मेरे मालिक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।'

उत्तर—(क) इन पंक्तियों के माध्यम से उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ साहब का सच्चे सुर के प्रति समर्पण का भाव दिखाई पड़ता है। जब एक दिन किसी शिष्या ने उनको फटी लुंगी पहनकर लोगों से मिलने पर टोका तब उन्होंने कपड़ों को महत्व न देकर सुर की महत्ता को दर्शाया। वे ख़ुदा से यही विनती करते थे कि उन्हें फटा सुर न दे । फटा कपड़ा तो सिल सकता है परंतु फटा सुर नहीं। उनका मानना था कि आज गरीबी है तो कल समृद्धि आ जाएगी परंतु शहनाई की कला में कमी नहीं आनी चाहिए।

(ख) मधुर स्वरों को सुनकर व्यक्ति इतना भाव - विभोर हो जाता है कि उसकी आँखों से अनगढ़ आँसू निकल आते हैं। ये आँसू सच्चे मोती की तरह होते हैं । उनके निकल आने पर सुर की महत्ता स्थापित हो जाती है। बिस्मिल्ला खाँ नमाज के बाद सजदे में खुदा से ऐसे ही सुर की माँग करते हैं। वे सुर को खुदा की नेमत मानते थे और उनके लिए सुर से बढ़कर कोई चीज़ कीमती नहीं।

प्रश्न 5 काशी में हो रहे कौन — से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे ?

उत्तर—समय के साथ काशी में बहुत सारी परंपराएँ लुप्त होती जा रही थीं। संगीत, साहित्य और अदब की बात में अब बहुत परिवर्तन आ रहे थे। संगीत साधना में घंटों अभ्यास करने वाले अब कहीं मिलते नहीं। हिन्दू - मुस्लिम एकता की नींव पर खड़ी काशी में अब धर्म का अर्थ भी बदलता जा रहा

© JCERT not to be republished

था। खान - पान की चीज़ों के लिए विख्यात काशी में अब वह बात नहीं रह गई थी। काशी में हो रहे इन्हीं परिवर्तनों से बिस्मिल्ला खाँ साहब व्यथित होते थे।

प्रश्न 6. पाठ में आए किन प्रसंगों के आधार पर आप कह सकते हैं कि—

(क) बिस्मिल्ला खाँ मिली — जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

(ख) वे वास्तविक अर्थों में एक सच्चे इनसान थे।

उत्तर-(क) बिस्मिल्ला खाँ अपने धर्म अर्थात् मुस्लिम धर्म के प्रति समर्पित इनसान थे। वे नमाज़ पढ़ते, सिजदा करते और खुदा से सच्चे सुर की नेमत माँगते थे। इसके अलावा वे हज़रत इमाम हुसैन की शहादत पर दस दिनों तक शोक प्रकट करते थे तथा आठ किलोमीटर पैदल चलते हुए रोते हुए नौहा बजाया करते थे। इसी तरह वे काशी में रहते हुए गंगामैया, बालाजी और बाबा विश्वनाथ के प्रति असीम आस्था रखते थे। वे हनुमान जयंती के अवसर पर आयोजित शास्त्रीय गायन में भी उपस्थित रहते थे। इन प्रसंगों के आधार पर हम कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खाँ मिली —जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

(ख) बिस्मिल्ला खाँ हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रतीक थे। उन्हें धार्मिक कट्टरता छू भी न गई थी। वे खुदा और हज़रत इमाम हुसैन के प्रति जैसी आस्था एवं श्रद्धा रखते थे, वैसी ही श्रद्धा एवं आस्था गंगामैया, बालाजी, बाबा विश्वनाथ के प्रति भी रखते थे। वे काशी की गंगा-जमुनी संस्कृति में विश्वास रखते थे। इन प्रसंगों के आधार पर हम कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खाँ सच्चे इनसान थे।

प्रश्न 7.बिस्मिल्ला खाँ के जीवन से जुड़ी उन घटनाओं और व्यक्तियों का उल्लेख करें जिन्होंने उनकी संगीत साधना को समृद्ध किया ?

उत्तर — बिस्मिल्ला खाँ की संगीत साधना को समृद्ध करने वाले व्यक्ति और घटनाएँ निम्नलिखित हैं —

1. बिस्मिल्ला खाँ का जन्म एक संगीत — प्रेमी परिवार में हुआ।
2. वे अपने नाना को बचपन से मीठी शहनाई बजाते देखा करते थे। उनके रियाज से चले जाने के बाद उसी शहनाई को ढूँढ़ते।
3. अपने मामूजान के सम पर आने पर अमीरुद्दीन पत्थर फेंककर दाद दिया करते थे।
4. वे रसूलनबाई और बतूलनबाई का गायन सुनकर इतने प्रभावित हुए कि संगीत सीखने की दिशा में दृढ़ कदम उठा लिये।
5. वे कुलसुम हलवाइन के कचौड़ियाँ तलने में संगीत की अनुभूति करते थे।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 8. बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन -कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?

© JCERT not to be republished

उत्तर--बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की अनेक विशेषताएँ हैं, जिनसे मैं बहुत प्रभावित हुआ। इन विशेषताओं में प्रमुख इस प्रकार से हैं —

1. **सादा जीवन - उच्च विचार-** बिस्मिल्ला खाँ अत्यंत सादा जीवन जीते थे। वे लुंगी पहने ही आगंतुकों से मिलने चले आते थे, परंतु उनके विचार अत्यंत उच्च थे।
2. **निरभिमानी-** सफलता की चोटी पर पहुँचने के बाद भी बिस्मिल्ला खाँ को अभिमान छू भी न पाया। इसके बाद भी खुदा से सच्चे सुर की नेमत माँगते रहते थे।
3. **धार्मिक सदभाव-** बिस्मिल्ला खाँ अपने धर्म के प्रति समर्पित होकर नमाज़ अदा करते थे और हजरत इमाम हुसैन के बलिदान के प्रति दस दिन का शोक मनाते थे तो गंगा मइया, बाबा विश्वनाथ और बालाजी के प्रति भी असीम आस्था रखते थे।
4. **परिश्रमशील स्वभाव-** बिस्मिल्ला खाँ अपने जीवन के अस्सी बरस पूरे करने के बाद भी रियाज़ करते थे और संगीत — साधना के प्रति समर्पित थे।
5. **सीखने की ललक-** बिस्मिल्ला खाँ की एक विशेषता यह भी थी कि उनमें सीखने की एक ललक थी। वे शहनाई के सर्वश्रेष्ठ कलाकार होने पर भी खुद को पूर्ण नहीं मानते थे। वे हमेशा सीखने के लिए लालायित रहते थे।

प्रश्न 9. मुहर्रम से बिस्मिल्ला खाँ के जुड़ाव को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर— मुहर्रम से बिस्मिल्ला खाँ का अत्यंत गहरा जुड़ाव था। इस महीने में शिया मुसलमान हज़रत इमाम हुसैन एवं उनके कुछ वंशजों के प्रति शोक मनाते हैं। इस समय वे न शहनाई बजाते हैं और न किसी संगीत कार्यक्रम में भाग लेते हैं। आठवीं तारीख को वे करीब आठ किलोमीटर पैदल रोते हुए नौहा बजाते जाते हैं। वे इस दिन कोई राग नहीं बजाते हैं। इस प्रकार वे एक सच्चे मुसलमान की भाँति मुहर्रम से सच्चा लगाव रखते हैं।

प्रश्न 10. बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे,तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर— बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे। वे अस्सी वर्षों तक लगातार शहनाई बजाते रहे। गंगा घाट पर बैठकर घंटों रियाज करते थे। वे इसे कला की साधना व उपासना की चीज़ मानते थे। वे अंत तक खुदा से सच्चे सुर की माँग करते रहे कि शायद वह अब भी उन्हें आकर कोई सच्चा सुर देगा जिसे पाकर वे श्रोताओं की आँखों में आँसू ला देंगे । उन्होंने अंत तक अपने आप को पूर्ण नहीं माना । उन्होंने कभी भी अपनी कला को कमाई का माध्यम नहीं बनाया। उन्होंने जीवनभर संगीत साधना जारी रखी थी,जो उनके कला के अनन्य उपासक होने को सिद्ध करती है।

© JCERT not to be republished